MSK – 003

परास्नातक कार्यक्रम

एम.ए. संस्कृत ऑनलाइन कार्यक्रम

(MSKOL)

सत्रीय कार्य

(जुलाई, **2025** एवं जनवरी, **2026** सत्रों के लिए)

MSK – 003 दर्शन : न्याय-वैशेषिक, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

मानविकी विद्यापीठ

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नई दिल्ली- **110068**

परास्नातक कार्यक्रम

सत्रीय कार्य (2025-26)

पाठ्यक्रम कोड : **MSKOL/MSK-003/2025-26**

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य **(TMA)** है। सत्रीय कार्य के लिए **100** अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जायेंगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये :

1.) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए।

2.) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनाँक : .....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन: सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाईयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ विशेष बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए।

2. अभ्यास: उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबन्धात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढ़ग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढ़ग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियों न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. प्रस्तुति: जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट: याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ:

जुलाई, 2025 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2026

जनवरी, 2026 सत्र के लिए : 30 सितम्बर, 2026

सत्रीय कार्य

MSK – 003

दर्शन : न्याय-वैशेषिक, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

पाठ्यक्रम कोड : **MSK – 003**

पाठ्यक्रम शीर्षक : दर्शन : न्याय-वैशेषिक, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

सत्रीय कार्य : **MSK – 003/TMA/2025-26**

पूर्णांक : 100

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : -

(क) व्याख्या आधारित प्रश्न : - **15X3=45**

1. निम्नलिखित की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए: -

(अ) अयथार्थानुभवस्त्रिविधः - संशय-विपर्यय-तर्कभेदात् । एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्धनानाधर्मवैशिष्ट्यावगाहिज्ञानं संशयः । यथा स्थाणुः वा पुरुषो वेति । मिथ्याज्ञानं विपर्ययः । यथा शुक्ताविदं रजतमिति । व्याप्यारोपेण व्यापकारोपस्तर्कः । यथा यदि वह्निर्न स्यात् तर्हि धूमोऽपि न स्यादिति ।

अथवा

आद्यस्यन्दनासमवायिकारणं द्रवत्वम् । पृथिव्यप्तेजोवृत्ति । तद्द्विविधं – सांसिद्धिकं नैमित्तिकञ्च । सांसिद्धिकं जले । नैमित्तिकं पृथिवीतेजसोः । पृथिव्यां घृतादावग्निसंयोगजं द्रवत्वम् । तेजसि सुवर्णादौ ।

(ब) जीवन्मुक्तो नाम स्वस्वरूपाखण्डब्रह्मज्ञानेन तदज्ञानबन्धनद्वारा स्वस्वरूपाखण्डब्रह्मणि साक्षात्कृतेऽज्ञानतत्कार्य सञ्चितकर्मसंशयविपर्ययादीनामपि बाधितत्वादखिलबन्धरहितो ब्रह्मनिष्ठः ।

अथवा

चतुर्विधशरीराणि तु जरायुजाण्डजस्वेदजोद्भिज्जाख्यानि । जरायुजानि जरायुभ्यो जातानि मनुष्यपश्वादीनि । अण्डजान्यण्डेभ्यो जातानि पक्षिपन्नगादीनि । स्वेदजानि स्वेदेभ्यो जातानि यूकमशकादीनि । उद्भिज्जानि भूमिमुद्भिद्य जातानि लतावृक्षादीनि ।

(स) प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टं त्रिविधमनुमानमाख्यातम् ।

तल्लिङ्गलिङ्गीपूर्वकमाप्तश्रुतिराप्तवचनन्तु ।।

अथवा

उभयात्मकमत्र मनः संकल्पकमिन्द्रियं च साधर्म्यात् ।

गुणपरिणामविशेषान्नानात्वं बाह्यभेदाश्च ।।

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए : - **10X3=30**

2. आस्तिक दर्शनों का वर्णन कीजिए ।

3. अर्थसंग्रह के अनुसार 'वेद की अपौरुषेयता' पर प्रकाश डालिए ।

4. सत्कार्यवाद को विस्तार से समझाइए ।

5. तर्कसंग्रह के अनुसार अनुमान प्रमाण का सविस्तार उल्लेख कीजिए ।

6. वेदान्तसार में वर्णित सृष्टि प्रक्रिया को बताइए ।

(ग) निम्नलिखित में से किन्हीं पांच पर टिप्पणी लिखिए: - **5X5=25**

(i) वेदान्तसार के अनुसार 'अध्यारोप' (ii) तर्कसंग्रह के अनुसार 'कर्म'

(iii) तर्कसंग्रह के अनुसार 'विशेष' (iv) बाधित हेत्वाभास

(v) अर्थसंग्रह के अनुसार 'मन्त्र' (vi) अर्थसंग्रह के अनुसार 'विनियोग विधि'

(vii) वेदान्तसार के अनुसार 'शमादि षट्क सम्पत्ति' ।